ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2023; 9(5): 307-310
www.allresearchjournal.com
Received: 12-02-2023
Accepted: 11-03-2023

हरि प्रसाद
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. स्वर्णलता त्रिपाठी
प्राचार्य, कृष्णा कालेज ऑफ एजुकेशन, मनगवाँ, जिला रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
हरि प्रसाद
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के शैक्षिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन

हरि प्रसाद एवं डॉ. स्वर्णलता त्रिपाठी

सारांश
इस शोध पत्र के द्वारा माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के शैक्षिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस शोध कार्य को शहडोल जिले के सभी विकासखण्डों से 2 शहरी – 2 ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय कुल 20 विद्यालयों से 20 छात्र व 20 छात्राएं कुल 800 छात्रों का चयन दैव निदर्शन पद्धति द्वारा शैक्षिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन हेतु किया गया है। छात्रों की शैक्षिक अभिरूचि ही उनकी शिक्षा की नवीन सोच व विचार शक्ति की आधारशिला है। अपनी शैक्षिक अभिरूचि के कारण ही उनमें विभिन्न प्रकार के व्यक्तित्व का निर्माण होता है। शोध के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिरुचि में सार्थक अन्तर है, लेकिन छात्र और छात्राओं के शैक्षिक अभिरुचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

कूटशब्द : शहडोल जिला, माध्यमिक शिक्षा स्तर, शहरी, ग्रामीण, छात्र–छात्राएँ, शैक्षिक अभिरुचि

1. प्रस्तावना
शिक्षा का यह क्षेत्र भी शोध की दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण है, परन्तु भारतवर्ष में इस क्षेत्र पर शोध–कार्य बहुत हुए। एम.एड. स्तर पर कुछ कार्य व्यावसायिक अभिरुचियों तथा शैक्षिक निष्पत्तियों पर किये गये हैं साथ ही वृतिक विकास शोध कार्य किये जायें। इस क्षेत्र में ऐसे शोध कार्यों को करने की आवश्यकता है जिससे निर्देशन विधियों का भारतीय सन्दर्भ में विकास किया जाये। इसी प्रकार व्यावसायिक अभिरुचियों का अध्ययन अपनी परिस्थिति में किया जाये।
रुचि किसी वस्तु, व्यक्ति, तथ्य, प्रतिक्रिया आदि को पसंद करने तथा उसके प्रति आर्कषित होने की प्रवृत्ति है। शिक्षकों की शिक्षा के क्षेत्र में आने तथा शिक्षण व्यवसाय को चुनना उनकी शैक्षिक रुचि को प्रदर्शित करता है। किन्तु कभी–कभी व्यक्ति अपने पूर्व नियोजित लक्ष्य को प्राप्त नही कर पाता और उसे अपने जीविकोपार्जन हेतु शिक्षा के क्षेत्र में जुड़ना पड़े तो वह व्यक्ति रुचि के अभाव में अपने कार्य को सफलता पूर्वक करने में असफल ही रहते है।
प्राचीन काल में शिक्षा द्वारा बालक के सर्वांगीण विकास पर बल दिया जाता था। उसी प्रकार आज आधुनिक शिक्षा भी बालक के सर्वांगीण विकास पर बल देती है। बालक का सर्वांगीण विकास विद्यालय की चारदीवारी के अन्दर सम्भव नहीं है। बालक का सर्वांगीण विकास तभी सम्भव है, जब उसकी रूचियों और व्यक्तित्व आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर उसे शिक्षित किया जाय। वर्तमान शिक्षा में माध्यमिक स्तर की शिक्षा का विशेष महत्त्व है, जिसमें अधिगमकर्ता पर विशेष ध्यान दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी उच्च शिक्षा से पूर्व की शिक्षा पर विशेष ध्यान देते हुये कहा गया है कि राष्ट्र के भविष्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है अतः माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की विशेषताओं पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। माध्यमिक विद्यालयों में सम्पूर्ण देश में 10+2 की सरंचना लागू है। माध्यमिक विद्यालयों में भौतिक सुविधायें शिक्षक, पाठयक्रम, सरंचना, समान होने पर भी विद्यार्थी शिक्षा में एक समान रूचि नही लेते है। जिसका उनके व्यक्तित्व कारकों पर विशेष प्रभाव पड़ता है।

2. अध्ययन की आवश्यकता
शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल शहडोल जिले वरन् सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्य पर उनके सामाजिक स्तर के प्रभाव का आकंलन किया जा सकेगा तथा ऐसे सुझाव शोध कार्य के उपरान्त दिये जा सकेंगे जिनका प्रयोग कर राज्य सरकार माध्यमिक शिक्षा स्तर पर योजना के क्रियान्वयन को प्रभावी ढंग से विकसित करने में समर्थ

हो सकता है। शैक्षिक रूचि सीखने–सिखाने क प्रक्रिया को संचालित करने वाली केंद्रीय शक्ति होती है जिसका लक्ष्य विद्यार्थियों में सीखने की रूचि को विकसित करना होता है। शैक्षिक रूचि बच्चो को केवल सीखने में ही सहायता प्रदान नहीं करती, बल्कि उनके दृष्टिकोणों, उनकी प्रवृत्तियों तथा अन्य व्यक्तित्व सम्बन्धी विशेषताओं के निर्माण में सहायक होती है। यह उनके व्यक्तित्व के निर्माण की दिशा भी निर्देशित करती है।

3. उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया है:–

1. शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के शैक्षिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ

परिकल्पना शोध समस्या एवं समस्या समाधान के बीच की कड़ी है। परिकल्पनाा से तात्पर्य है कि किसी भी समस्या के हल के बारे में पूर्वानुमान लगाना। परिकल्पना एक ऐसा पूर्व विचार है, जो किसी सामान्य के संबंध में बना लिया जाता है और जिसकी सार्थकता की परीक्षा के लिए आवश्यक तथ्यों को एकत्रित किया जाता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् है:–

1. शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिरुचि में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के शैक्षिक अभिरुचि में कोई सार्थक अन्तर नही है।

5. शोध समस्या का सीमांकन

शोध कार्य का क्षेत्र जिला शहडोल है। इसके अन्तर्गत 5 विकासखण्ड – सोहागपुर, गोहपारू, ब्यौहारी, बुढ़ार एवं जयसिंहनगर हैं। अतः जिला अन्तर्गत स्थित माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के शैक्षिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन तक परिसीमन किया गया है।

6. शोध विधियाँ :

शोध कार्य को संपूर्णता प्रदान करने हेतु कई प्रकार की शोध विधियों का उपयोग किया जाता है। शोध विधियों के मुख्य प्रकार ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं प्रयोगात्मक है। शोध कार्य के अनुरूप प्रत्येक शोध विधि की अपनी विशेषताएँ एवं उपयोगिता है। शैक्षिक अनुसंधान की दृष्टि से प्रस्तुत शोध कार्य मुख्य रूप से सर्वेक्षणात्मक (वर्णनात्मक) होगा। शोध अध्ययन में निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का उपयोग किया गया है –

6.1 सर्वेक्षण विधि – प्राथमिक स्त्रोतों से प्रदत्तों के संकलन एवं पूर्व संचालित प्रदत्तो के सत्यापन हेतु शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर के विद्यालयों का सर्वेक्षण किया गया है।

6.2 सांख्यिकी विधि – प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों के सारणीयन के उपरान्त आवश्यकतानुसार माध्य, माध्यिका एवं बहुलक, दो चरों में सार्थक अन्तर के आंकलन हेतु मध्यमान विचलन, टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध हेतु प्रमापीकृत शोध उपकरण डॉ. एस.पी. कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित शैक्षिक रुचि प्रपत्र प्रयुक्त किए गए है।

7. न्यादर्श चयन

अनुसंधान तथा शोध के प्रयोग का प्रारूप न्यादर्श की प्रविधि पर आधारित होता है। एक उत्तम प्रकार के शोध कार्य में न्यादर्श तथा उसकी जनसंख्या संबंधी समस्त सूचनाओं को दिया जाता है। शोध कार्य को सार्थक करने के लिए न्यादर्श का चयन किया जाता है। न्यादर्श के रूप में चयनित शहडोल जिले के जिले के सभी विकासखण्डों से 2 शहरी –2 ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय कुल 20 विद्यालयों से 20 छात्र व 20 छात्राएं कुल 800 छात्रों का चयन दैव निदर्शन पद्धति द्वारा अध्ययन हेतु किया गया है।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिरुचि की वर्तमान स्थिति पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989)[1], कुशवाहा, उमाशंकर एवं श्रीवास्तव, अखिलेश कुमार (2021)[2], कपिल, एच.के. (1996)[3], खुल्लर, के.के. (1988)[4], शर्मा, योगेश्वर प्रसाद (2016)[5], तिवारी, श्वेता (2020)[6], झा, नन्द कुमार एवं श्रीवास्तव, अखिलेश कुमार (2020)[7], सिंह, विवेक कुमार एवं सिंह डी.एस. बघेल (2017)[8], सिंह, विवेक कुमार एवं सिंह डी.एस. बघेल (2017)[9], शर्मा, सुधांशु एवं गुप्ता, डॉ. सविता (2022)[10]।

9. शोध क्षेत्र का परिचय :

शहडोल जिला भारत वर्ष के हृदय स्थल मध्य प्रदेश के उत्तर–पूर्वी भाग में $22^0 38'$ उत्तरी अक्षांश से $24^0 20'$ उत्तरी अक्षांश एवं $30^0 28'$ पूर्वी देशांतर से $82^0 12'$ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। शहडोल जिले का नाम सोहागपुर गॉव के शहडोलवा अहिर के नाम पर आधारित है। शहडोल जिले का कुल क्षेत्रफल 5671 वर्ग कि.मी. है। इस जिले की उत्तर से दक्षिण की अधिकमतम लम्बाई 170 कि.मी. तथा पूर्व से पश्चिम की अधिकतम लम्बाई 110 कि.मी. है। प्रशासकीय दृष्टि से शहडोल जिले में चार तहसीलें–सोहागपुर, जैतपुर, ब्यौहारी, एवं जयसिंह नगर हैं। तथा पॉच विकासखण्ड–सोहागपुर, पाली, ब्यौहारी, बुढ़ार एवं जयसिंह नगर हैं।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. – 1 : "शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिरुचि में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

सारणी क्रमांक 1: शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन

समूह		ग्रामीण	शहरी
समूह की संख्या (N)		400	400
मध्यमान (M)		58.90	62.95
मानक विचलन (SD)		16.62	15.85
क्रान्तिक निष्पत्ति ('t')		3.53	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	

$df = (N_1-1) + (N_2-1)$

$df = (400-1) + (400-1) = 399 + 399 = 798$

उपरोक्त सारणी क्रमांक 1 मे न्यादर्श में चयनित शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिरुचि से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के ग्रामीण माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिरुचि में सार्थकता का औसत मध्यमान 59.88 है तथा मानक विचलन 16.09 है और शहरी माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिरुचि में सार्थकता का औसत मध्यमान 63.90 है तथा मानक विचलन 15.71 है।

798 कि पर सार्थकता के लिए श्जश का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.62 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.98 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त श्जश का मान 3.92 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से अधिक है। अतः शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिरुचि में सार्थक अन्तर है। अतः परिकल्पना क्र. 1 निरसित होती है।

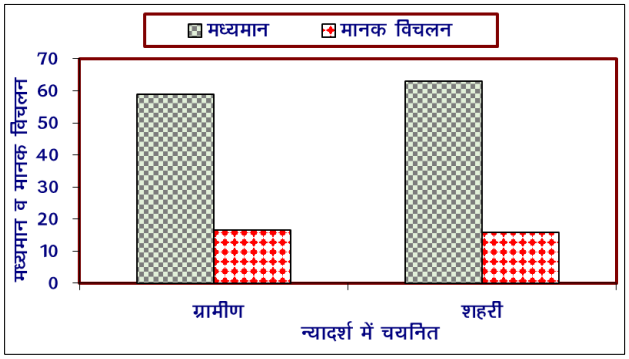

आरेख 1 : शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन

परिकल्पना क्र. – 2 : "शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के शैक्षिक अभिरुचि में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

सारणी क्रमांक 2: शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के शैक्षिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन

समूह		छात्र	छात्राएँ
समूह की संख्या (N)		400	400
मध्यमान (M)		59.58	59.10
मानक विचलन (SD)		16.68	16.54
क्रान्तिक निष्पत्ति ('t')		0.40	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	

$df = (N_1-1) + (N_2-1)$

$df = (400-1) + (400-1) = 399 + 399 = 798$

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 मे न्यादर्श में चयनित शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के शैक्षिक अभिरुचि से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के शैक्षिक अभिरुचि में सार्थकता का औसत मध्यमान 59.58 है तथा मानक विचलन 16.68 है और छात्राओं के शैक्षिक अभिरुचि में सार्थकता का औसत मध्यमान 59.10 है तथा मानक विचलन 16.54 है।

798 कि पर सार्थकता के लिए श्जश का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.62 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.98 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त श्जश का मान 0.40 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से कम है। अतः शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के शैक्षिक अभिरुचि में कोई सार्थक अन्तर नही है। अतः परिकल्पना क्र. 2 सत्यापित होती है।

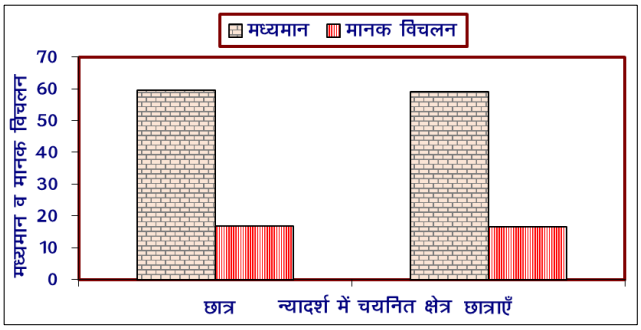

आरेख 2: शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के शैक्षिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन

निष्कर्ष :

शोध क्षेत्र के ग्रामीण माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिरुचि में सार्थकता का औसत मध्यमान 59.88 है तथा मानक विचलन 16.09 है और शहरी माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिरुचि में सार्थकता का औसत मध्यमान 63.90 है तथा मानक विचलन 15.71 है।

शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के शैक्षिक अभिरुचि में सार्थकता का औसत मध्यमान 59.58 है तथा मानक विचलन 16.68 है और छात्राओं के शैक्षिक अभिरुचि में सार्थकता का औसत मध्यमान 59.10 है तथा मानक विचलन 16.54 है।

शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिरुचि में सार्थक अन्तर है, लेकिन छात्र और छात्राओं के शैक्षिक अभिरुचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

संदर्भ :

1. अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिनः मनोविज्ञान एवं शिक्षा में मापन व मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
2. कुशवाहा, उमाशंकर एवं श्रीवास्तव, अखिलेश कुमार (2021): सतना जिले में किशोरावस्था के छात्र व छात्राओं में मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, International Journal of Applied Research; 1989;7(1):400-403.
3. कपिल, एच.के. (1996) : सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
4. खुल्लर, के.के. (1988) : राष्ट्रीय शिक्षा नीति, नई दिल्ली विज्ञापन एवं दृष्य प्रसार निर्देशालय.
5. शर्मा, योगेश्वर प्रसादः माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक रूचि का उनके व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी– बहिर्मुखी) आयामों के सन्दर्भ में अध्ययन, Golden Research Thoughts, 2016;6(5):1-4.
6. तिवारी, श्वेता– माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में अभिरूचि, अभिप्रेरणा एवं मूल्य का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन, International Journal of Scientific Research in Science and Technology. 2020;7(6):366-371.
7. झा, नन्द कुमार एवं श्रीवास्तव, अखिलेश कुमार, सतना जिले के शासकीय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, International Journal of Advanced Academic Studies. 2020;2(3):369-372.
8. सिंह, विवेक कुमार एवं सिंह डी.एस. बघेल (2017) : "किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन" International Journal of Multidisciplinary Education and Research. 2017;2(5):79-83.
9. सिंह, विवेक कुमार एवं सिंह डी.एस. बघेल : "किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन" International Journal of Multidisciplinary Education and Research. 2017;2(5):79-83.
10. शर्मा, सुधांशु एवं गुप्ता, डॉ. सविताः उच्च माध्यमिक स्तर के बालकों के अभिभावकों के शैक्षिक स्तर का उनके बालकों की शैक्षिक उपलब्धि एवं रूचियों पर प्रभाव का अध्ययन, Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (JETIR), 2022;9(9):875-883.